भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 2 | **सितम्बर** 2001 | **अंक** 9

हिन्दी आलोचना के शिखरपुरुष **डॉ० नामवर सिंह** ने गत एक मई को अपने जीवन के 74 वर्ष पूरे कर 75वें वर्ष में प्रवेश किया। वाराणसी जिले के (अब जिला चन्दौली) जीयनपुर गाँव में जन्मे, काशी में शिक्षा प्राप्त और डॉक्टर हजारीप्रसाद द्विवेदी के परमप्रिय शिष्य नामवर सिंह की लोकयात्रा काशी, आगरा, जोधपुर होते दिल्ली तक पहुँची। दिल्ली उनकी वर्तमान कर्मभूमि है।

नामवर सिंह ने छात्रजीवन में कवि, शिक्षा प्राप्त करने के बाद अध्यापक और आलोचक के रूप में हिन्दीजगत में पदार्पण किया। वाराणसी के दैनिक 'आज' अखबार के वार्षिक साहित्य-विशेषांक में साहित्य के विभिन्न पक्षों पर आलोचनात्मक लेख उनके आलोचनापसन्द जीवन के प्रारम्भिक लेख हैं। वे संघर्षशील व्यक्ति हैं। वे अपने बेरोजगारी के दिनों में भी गम्भीर अध्ययन से विमुख नहीं हुए। वे पढ़ते अधिक हैं, लिखते बहुत कम हैं। वे कबीर की तरह अपनी बात अपने व्याख्यानों के माध्यम से प्रबुद्धजनों, रसिकों, साहित्यप्रेमियों तथा जनता तक पहुँचाते हैं। उनकी आलोचना में कबीर की तरह तेवर हैं और एक वाक्य में ऐसी भी बात कह जाते हैं, जिस पर लम्बे समय तक रसिक और साहित्यप्रेमी चिन्तन करते रहते हैं।

नामवरजी की आलोचना में परम्परा और व्यक्तित्व में संस्कार का मणिकांचन योग है। वे किसानपुत्र हैं। उनमें गाँव का सादा जीवन, उच्च विचार और साहित्य की परम्परा उनकी आलोचना की पृष्ठभूमि है। यही कारण है कि उन्होंने हिन्दी आलोचना को नयी दृष्टि दी और उसे प्रखर बनाया। नामवरजी को उनकी 75वें जन्मदिन पर हार्दिक बधाई।

—धीरेन्द्रनाथ सिंह

राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता में शिक्षा

आज शिक्षा देश की राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता का शिकार बन गई है। शिक्षा का स्वरूप क्या हो, शिक्षा के माध्यम से युवकों में राष्ट्रीय चेतना किस प्रकार जागृत की जाय, उन्हें विवेकशील कैसे बनाया जाय, उनमें राष्ट्रीय चेतना और गौरव की अनुभूति कैसे करायी जाय? यह विवाद का विषय बन गया है। भारत के अतीत का स्वरूप क्या था, वैदिक सभ्यता क्या वास्तव में थी? वैदिक ग्रन्थ और उनमें वर्णित विषय क्या प्रामाणिक हैं? संस्कृत क्या भारत की सांस्कृतिक भाषा है, इस भाषा में उपलब्ध विज्ञान, गणित, भूगोल आदि के ग्रन्थ मान्य हैं। क्या सभी प्राचीन बातें मिथक हैं, उनमें तनिक भी सत्य नहीं है। क्या सारा प्राचीन साहित्य और ज्ञान साम्प्रदायिक है?

केन्द्र में भारतीय जनता पार्टी का शासन होने से क्या शिक्षा का भगवाकरण किया जा रहा है, साम्प्रदायिकता और धार्मिक उन्माद को बढ़ाया जा रहा है? संस्कृत के अध्ययन को प्रोत्साहन नेहरूजी के शासनकाल से ही दिया जाता रहा है। संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों के प्रकाशन के लिए शासन ने करोड़ों रुपये व्यय किये। आज जब उन ग्रन्थों को अध्ययनशील बनाया जा रहा है तब कहा जाता है कि शिक्षा का भगवाकरण हो रहा है। बंधु, ज्ञान कभी साम्प्रदायिक नहीं होता। वेद का अध्ययन, वैदिक गणित का अध्ययन, ज्योतिष का अध्ययन, संस्कृत ग्रन्थों में वर्णित वैज्ञानिक तथ्यों का अध्ययन क्या सभी भगवाकरण की राजनीति है? ज्योतिष का एक शास्त्र है। सभी देशों में यह विद्या किसी न किसी रूप में स्थित है, क्यों न वैज्ञानिक आधार पर इसका अध्ययन करते हुए तुलनात्मक समीक्षा की जाय? क्या आज देश के बुद्धिजीवी इतने दुर्बल हो गए हैं, उन्हें अपने ज्ञान पर विश्वास नहीं है, या भयभीत हैं जो ज्ञान की इस धारा के अध्ययन का विरोध कर रहे हैं? तथाकथित ज्ञान को तर्क से काटिए, केवल यह कहकर कि साम्प्रदायिक है, भगवाकरण किया जा रहा है, यह न कहिए।

पड़ोसी देश, जिसका जन्म ब्रिटिश सत्ता ने दो सम्प्रदायों के बीच भेद उत्पन्न कर कराया है, उसकी प्रतिक्रिया निरन्तर होती आ रही है। पड़ोसी देश ने सर्वधर्म समभाव यानी दीनइलाही के प्रणेता अकबर को अपने इतिहास से खारिज कर दिया है जबकि बाबर और औरंगजेब को महिमामंडित किया है। इस साम्प्रदायिक सोच को पड़ोसी देश से बढ़ावा मिला जिसकी प्रतिक्रिया इस देश में भी होती रही।

आज सत्ता का संघर्ष है, शिक्षा और इतिहास संघर्ष के माध्यम बन गए हैं। मैकाले ने भारतीयों को अपनी सत्ता का पोषक बनाया, राजनीतिक दल यही कर रहे हैं—सत्ता के लिए, वोट के लिए। ब्रिटिश सत्ता ने भारतीयों का दो जातियों में बाँटा और हमारे नेता देश की जनता को भिन्न-भिन्न जातियों-दलितों, दलितों में भी और पिछड़े हुए जिनकी अनेक शाखाएँ-प्रशाखाएँ हैं उनको लेकर हमारे नेता झूल रहे हैं। देश के बुद्धिजीवी इसको रोकने का प्रयास करें। जनता को स्वावलम्बी बनने की शिक्षा दें, सत्तावलम्बी नहीं, तभी देश का विकास होगा।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

पुरस्कार-सम्मान

इंदिरा गोस्वामी को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार

वर्ष 2000 का 36वाँ **ज्ञानपीठ पुरस्कार** असमिया की साहित्यकार **इंदिरा गोस्वामी** को दिया जायगा। इंदिराजी भारत के उन विशिष्ट साहित्यकारों में से एक हैं जिन्होंने अपनी लेखनी साहित्य की विभिन्न विधाओं पर चलायी है। उनकी आत्मकथा 'जिन्दगी का सौदा नहीं' एक अनमोल कृति है। उनकी अन्य प्रमुख कृतियाँ हैं—चेनाबर स्रोत, भामरे धरा तरोवाल (उपन्यास, साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत), उने खोवा होवदा (उपन्यास)।

जिस समय पुरस्कार की घोषणा हुई, इंदिरा गोस्वामी दक्षिण कामरूप के भ्रमण पर थीं। उल्फा उग्रवादियों से मिल रही थीं, सुदूर गाँवों में जो ड्रम बजाते हैं, उन गरीब लोगों से बात कर रही थीं, नष्ट होती लोककलाओं पर शोध कर रही थीं, रेशम बुनने वालों के जीवनजगत को समझने का यत्न कर रही थीं।

'सिल बट्टा' पुरस्कृत

वर्ष 2001 का भारतभूषण अग्रवाल स्मृति पुरस्कार कवि **हेमंत कुकरेती** को 'वागर्थ' में प्रकाशित उनकी कविता 'सिल बट्टा' के लिए प्रदान किया गया है। कुकरेती दिल्ली विश्वविद्यालय के श्यामलाल कालेज में अध्यापक हैं।

उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान के पुरस्कार

वाराणसी के संस्कृत विद्वान् **डॉ० गजानन सदाशिव शास्त्री मुसलगाँवकर** को एक लाख 51 हजार राशि के **विश्वभारती संस्कृत पुरस्कार** 1999 से सम्मानित किया जायगा।

श्री मुसलगाँवकर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राच्यधर्म संकाय के न्याय विभाग से 1978 में सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने संस्थान द्वारा संस्कृत साहित्य वाङ्मय के वृहद इतिहास के 'न्यायखंड' का सम्पादन किया।

विशिष्ट पुरस्कार

51 हजार के विशिष्ट पुरस्कार **आचार्य रामनाथ सुमन** (गाजियाबाद), **डॉ० परमानंद शास्त्री** (अलीगढ़), **मिनाथ शर्मा, प्रो० कैलाशपति त्रिपाठी, डॉ० वायुनन्दन पाण्डे** (वाराणसी) को दिया जायगा

अन्य पुरस्कार

25-25 हजार के **वेदपण्डित पुरस्कार** 10 विद्वानों को, **नामित पुरस्कार** 5 विद्वानों को, 11 हजार के विशेष पुरस्कार 6 विद्वानों को, **पुस्तकों के आधार पर** 5-5 हजार के 20 पुरस्कार संस्कृत लेखकों को दिये जायँगे।

हीरक जयन्ती

श्री पुरुषोत्तम हिन्दी भवन, दिल्ली में 1 अगस्त 2001 को डॉ० वीरेन्द्र सक्सेना हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य में श्री कमलेश्वर ने साहित्यिक अभिनन्दन किया। समारोह में डॉ० बालशौरि रेड्डी, श्री राजेन्द्र अवस्थी, श्री जगदशी चतुर्वेदी, डॉ० शेरजंग गर्ग आदि साहित्यकारों ने श्री सक्सेना के प्रति शुभकामनाएँ अर्पित की। 31 जुलाई 2001 को केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के उपनिदेशक (भाषा) के पद से सेवानिवृत्त होने के उपलक्ष्य में निदेशालय के सहयोगियों ने विदाई देते हुए सुखद भविष्य की कामना की।

गजानन वर्मा को साहित्य पुरस्कार

राजस्थान के साहित्यकार और लोकगीतकार **गजानन वर्मा** को इस वर्ष के **कमला गोयनका साहित्य पुरस्कार** के लिए चुना गया है। यह पुरस्कार राजस्थानी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया जाता है।

राजस्थान के रतनगढ़निवासी श्री वर्मा को यह पुरस्कार उनकी पुस्तक 'हैलोमार सुर सिणगार' के लिए दिया गया है। पुरस्कार के तहत इक्यावन हजार रुपये और प्रशस्तिपत्र प्रदान किए जाएंगे। पिछले वर्ष यह पुरस्कार किशोर कल्पनाकांत को दिया गया था।

उ०प्र० राजभवन का भारतीयकरण

यद्यपि हिन्दी राजभाषा बनाई जा चुकी है, फिर भी सत्ता के गलियारों में विदेशी संस्कृति यानी अंग्रेजी मजबूती से सब जगह पाँव जमाए है। पर जब कोई संस्कारवान् व्यक्ति उच्च पद पर पहुँचता है, तब वह कुछ सुखद परिवर्तन कर सकता है।

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल का लखनऊस्थित सरकारी निवास 'राजभवन' के नाम से जाना जाता है, लेकिन उसके विभिन्न कक्षों के नाम अभी तक अंग्रेजी में प्रचलित थे। इस वर्ष नए राज्यपाल आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री ने उन नामों का हिन्दीकरण कर दिया है। विशाल भोजन-कक्ष 'बैंक्वेट हाल' अब 'अन्नपूर्णा कक्ष' कहलाएगा। मिनी 'बैंक्वेट हाल' 'तृप्ति' कहलाएगा। 'पिंक रूम' अब 'शतकमल' और 'ब्लू रूम' 'नीलकमल' कहलाएँगे। गुप्त कला रूम और 'कांफ्रेंस रूम' 'प्रज्ञा' के नाम से जाने जाएँगे। 'गवर्नर्स रूम' अब 'परिमल' कहलाएगा। 'वी०वी०आई०पी० विंग' अब 'पारिजात' कहलाएगा। राजभवन गार्डन अब 'धन्वंतरि वाटिका' के नाम से जाना जाएगा।

ताकधिनाधिन

अटकन-बटकन चपत पड़ाका
बदल गया चेहरे का खाका
तमगा लगा-लगाकर आये
संसद में लतखोरी काका
बुद्ध-सिद्धू कालू निरधिन
ताकधिनाधिन ताकधिनाधिन!

हिन्दी प्रदेश में हिन्दी ?

बड़े-बड़े हिन्दी साहित्यकारों को जन्म देने वाले देश के हिन्दीभाषी उत्तर प्रदेश में हाई स्कूल और इण्टरमीडिएट की परीक्षाओं में हिन्दी में फेल होने का प्रतिशत 50 प्रतिशत से ज्यादा रहा। हाई स्कूल में इस बार 57 प्रतिशत विद्यार्थी हिन्दी में फेल हुए। इण्टरमीडिएट में 21 प्रतिशत छात्र हिन्दी में फेल हुए। हाई स्कूल में इस विषय में फेल होनेवाले विद्यार्थी अन्य विषयों में अच्छे अंक प्राप्त किये हैं।

फेल होनेवाले ज्यादातर विद्यार्थी या तो हिन्दी परिवेश से हैं या फिर सरकारी महाविद्यालयों से हैं।

शिक्षा-सचिव पी०के० झा का कहना है कि जबकि हिन्दीक्षेत्र के लोगों को हिन्दी में पास करना अनिवार्य है। जहाँ एक ओर हिन्दी में फेल होने का यह हाल रहा वहाँ दूसरी ओर कान्वेंट स्कूल से पास होनेवाले विद्यार्थियों के अपने अनिवार्य विषय अंग्रेजी में पास होने का प्रतिशत बहुत अच्छा रहा।

क्यों ऐसा हुआ, इसके कारणों को ढूँढना चाहिए और उसके निराकरण की बात सोचनी चाहिए।

आज यह मान लिया गया है कि हिन्दी उत्तर प्रदेश की प्रमुख भाषा है, अत: इसे पढ़ने-पढ़ाने की आवश्यकता नहीं है। किसी भी भाषा के ज्ञान के लिए अध्ययन और लेखन का अभ्यास आवश्यक है। उत्तर प्रदेश के विद्यालयों में सामान्यत: इस पर ध्यान नहीं दिया जाता। नारा लगाते हैं अंग्रेजी हटाओ तो क्या लाओ?—भोजपुरी, अवधी, बुंदेली, ब्रज। इन बोलियों का साहित्य पढ़ें तो भी हिन्दी का ज्ञान बढ़ेगा। किन्तु आज राजकाज की तरह शिक्षा का काज भी चल रहा है। नेता के लिए सर्वोच्च वरीयता राजनीति को है जो आज जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त है। भाषा संस्कृति और संस्कार का बोध कराती है, इसी से राष्ट्रीयता का विकास होता है। क्या इस पर ध्यान देने के लिए किसी की सोच और अवकाश है?

महँगी बनकर आई सस्ता
हालत हुई जा रही खस्ता
डाकू-चोर छेकते रस्ता
घूम रहा सरकारी दस्ता
लूट मची है फिर भी, लेकिन
ताकधिनाधिन ताकधिनाधिन!

घड़ी-घड़ी गड़बड़ी मची है गड़ा कलेजे गम कुर्सी तो चौकड़ी भर रही खड़े रह गये हम सड़े-सड़े से लोग कर रहे हैं खासा मलखम देख तमासा ताड़ेक तासा झइँयक झइँयक झम्!

जम्मू औ कसमीर कमच्छा
पड़ोसियों का हड़पा भच्छा
नाम मिताई काम सरौता
दगा दे गया है समझौता
जनता काट रही है कावा
गरम गरम सरकारी तावा
चकइक चकधुम मकइक लावा!

—स्व० श्याम तिवारी

हमारा भारत

भारतीय संविधान और हिन्दी

''संघ की राजभाषा—(1) संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होनेवाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप होगा। (2) खण्ड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारम्भ से पन्द्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारम्भ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था...।'' **—संविधान, अनुच्छेद 343**

''संघ का यह कर्त्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी में आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहाँ आवश्यक या वांछनीय हो वहाँ उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।'' **—संविधान, अनुच्छेद 351**

> ''भारत में हम अब एक ऐसी जाति पैदा करेंगे जिसका रंग और रक्त भारतीय रहेगा, परन्तु शिक्षा, दीक्षा और रुचि में वह अंग्रेज हो जायगा।'' **—मैकाले**

अंग्रेजी शिक्षा में छात्र-छात्राओं को अपनी सभ्यता जंगली, अंधविश्वासी, व्यावहारिकताशून्य बताकर पेश की जाती है। इस शिक्षा की रचना ही उसे उसकी परम्परागत संस्कृति से पृथक करने के लिए हुई। यदि शिक्षित युवकों से अनेकानेक सम्पूर्णत: अंतर्राष्ट्रीय नहीं होते तो कारण यही है कि उसमें प्राचीन संस्कृति का मूल गहरा है, जिसको निर्मूल करनेवाली विपरीत शिक्षा भी पूर्णत: निर्मूल नहीं कर सकी। यदि मेरी सत्ता होती तो मैं अधिकतर वर्तमान पाठ्यपुस्तकों को नष्ट कर देता। **—महात्मा गाँधी**

❑ ❑ ❑

हम उन भारतीयों के बहुत ऋणी हैं जिन्होंने हमें गिनना सिखलाया, जिसके बिना कोई वैज्ञानिक खोज सम्भव ही नहीं। **—अल्बर्ट आइंस्टीन**

❑ ❑ ❑

भारत मानवजाति का पालना है। इतिहास की माँ है। आख्यानों की दादी है और परम्पराओं की परदादी है। मानव इतिहास में सर्वाधिक मूल्यवान और सबसे ज्यादा सीखभरी सामग्री भारत के खजाने में है। **—मार्क ट्वेन**

❑ ❑ ❑

भारत समस्त प्रजातियों की माँ है। संस्कृत भारतीय भाषाओं की माँ है। वह माँ है, हमारे दर्शन की, हमारे गणित की, वह माँ है, ईसाई धर्म में समाहित तमाम आदर्शों की। वह माँ है लोकतंत्र की। बहुत से अर्थों में भारत माँ, हम सबकी माँ है।

—विल डुरेन्ट

❑ ❑ ❑

प्राचीन भारतीय ग्रन्थों और वेदों से हमने शल्य चिकित्सा की कला, औषधि-विज्ञान, संगीत, भवन निर्माण आदि बहुत-सी चीजें सीखी हैं। यह सब संस्कृति, धर्म, विज्ञान, नैतिकता, कानून, ब्रह्माण्ड शास्त्र आदि का इनसाइक्लोपीडिया है।

—विलियम जेम्स

❑ ❑ ❑

हम सारी दुनिया को देख जाएँ यह पता लगाने के लिए कि कौन-सा देश है जो सभी तरह की सम्पत्तियों, शक्तियों, सुन्दरताओं की प्रकृति-प्रदत्त विरासत से परिपूर्ण है। पृथ्वी पर स्वर्ग है तो मैं कहूँगा भारत। **—मैक्समूलर**

शब्दावली आयोग देश भर में 100 क्लबों की स्थापना करेगा।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के माध्यमिक शिक्षा और उच्च शिक्षा विभाग के दिल्लीस्थित वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष डॉ० आर०ए०के० श्रीवास्तव के कथनानुसार आयोग शब्दावलियों के मानकीकरण और प्रचार-प्रसार के लिए देश भर में लगभग 100 शब्दावली क्लबों की स्थापना का लक्ष्य रखा गया है।

वर्तमान समय में आयोग ज्ञान-विज्ञान के नए विषयों, तकनीकी शब्द-संग्रह तथा परिभाषा कोश का निर्माण कर रहा है। हिन्दी शब्दावली के अलावा अन्य भारतीय भाषाओं मणिपुरी, बोडो, असमियाँ, नेपाली तथा उड़िया में भी शब्दावली का निर्माण कार्य तेजी पर है। शब्दावली आयोग ने अपना वेबसाइट भी प्रारम्भ किया है।

अनुवाद के लिए अलग विभाग

प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी ने कहा है कि भारत में अनेक भाषाओं में साहित्य-सृजन होता है। हर साहित्य देश भर के पाठकों तक पहुँच सके, इसके लिए जरूरी है कि अनुवाद की परिपाटी चलती रहे। अनुवाद के महत्व को देखते हुए सरकार भविष्य में एक अलग तंत्र, पृथक विभाग बनाने पर विचार कर रही है, एक ऐसा विभाग जहाँ पुस्तकों का चयन हुआ करेगा और अच्छी पुस्तकों का अनुवाद भी निरन्तर चलता रहेगा।

भारतीय भाषा संवर्धन परिषद

भारतीय भाषाओं के संवर्धन के लिए प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में एक परिषद का गठन किया जायगा। मानव संसाधन विकामंत्री श्री मुरली मनोहर जोशी इस परिषद के उपाध्यक्ष होंगे। यह परिषद भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सूचीबद्ध भारतीय भाषाओं के विकास, प्रचार प्रसाद तथा संवर्धन के लिए सरकार को परामर्श देगी।

स्मृति-शेष

नेमिचंद जैन का निधन

हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार व तीर्थंकर, शाकाहार क्रान्ति के सम्पादक **डॉ० नेमिचंद जैन** का 8 अगस्त 2001 को इंदौर में दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। 1918 में आगरा में आपका जन्म हुआ। एम०ए० किया। 1948 में कलकत्ता के एक मारवाड़ी दफ्तर में किरानी का काम किया। 'प्रतीक' के सहायक सम्पादक रहे। 'वीणा' (इंदौर), 'रंग' (दिल्ली) का सम्पादन किया। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली में अध्यापन किया। हाल में भगवान महावीर फाउंडेशन, चेन्नई ने शाकाहार प्रचार के लिए आपको पाँच लाख रुपये का पुरस्कार देने की घोषणा की थी।

श्याम तिवारी का निधन

भारतेन्दु-साहित्य तथा भारतेन्दु-मण्डल के साहित्यकारों के गम्भीर अध्येता, हिन्दी और अवधी के गीतों के गायक, समर्थ निबन्धकार, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के हिन्दी विभाग के पूर्व प्राध्यापक **डॉक्टर श्याम तिवारी** का 23 अगस्त को 74 वर्ष की आयु में देहान्ता हो गया। अपनी पीढ़ी के समवयस्क रचनाधर्मियों में उन्होंने द्वेषरहित स्थान बना रखा था। उनका जन्म पूर्वी बंगाल (अब बांग्लादेश) में हुआ था जहाँ उनके पिता रेलकर्मी थे। वैसे वे उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले के गोसाईंगंज तहसील के निवासी थे। उनकी शिक्षा-दीक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई। उनके गीतों में गाँवों की लोकोक्तियाँ मधुर भाव से अभिव्यक्त होती थीं। उनमें भाव-प्रवणता सहज रूप से उद्घाटित होती थी।

'चकई कऽ चक धुम मकई कऽ लावा' और 'देख तमाशा तैड़िक ताशा झय्यम झय्यम झूमऽ' गीत के रचयिता डॉ० तिवारी का निधन अपने ज्येष्ठ पुत्र अनिल तिवारी के घर हिण्डालको में सहसा हृदयगति के अवरुद्ध होने से हुआ। हास-परिहासयुक्त रचनाएँ, वीर रस में लोकजीवन के जीवन्त मुहावरों का सफल प्रयोग करने के लिए वे सदा स्मरण किये जायंगे। उनके परिवार में उनकी धर्मपत्नी और दो पुत्र हैं। दोनों पुत्र उच्चपदस्थ अधिकारी हैं।

मराठी लेखक वेंकटेश का निधन

सुप्रसिद्ध मराठी लेखक **वेंकटेश मद्गुलकर** का लम्बी बीमारी के बाद 28 अगस्त को पुणे में निधन हो गया। साहित्य अकादमी पुरस्कारविजेता 74 वर्ष के थे।

ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता मनुभाई पंचाली का निधन

ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित सुविख्यात गुजराती उपन्यासकार **मनुभाई पंचाली** का 20 अगस्त 2001 को भावनगर में देहान्त हो गया। 87 वर्षीय मनुभाई लम्बे समय से बीमार चल रहे थे। उन्हें गुर्दे की बीमारी थी।

लेखक ही लेखक का दुश्मन

आजादी के पूर्व जो साहित्य की स्थिति थी उसमें स्वस्थ माहौल दिखाई पड़ता था लेकिन आजादी के बाद जहाँ साहित्यकारों-लेखकों को एकजुट होकर नया समाज बनाना चाहिए था वहाँ माहौल बिगड़ गया।

नेहरू के राज तक तो देश की स्थिति कुछ ठीक थी, लेकिन इंदिरा गाँधी के समय तक तो पूरी तरह से ही बिगड़ गयी। जो हाल राजनीति का हुआ वही हाल साहित्य का हो गया। महान साहित्यकार तो बहुत हुए लेकिन वे साहित्यिक माहौल की स्थिति को सुधार नहीं पाए। साहित्य आगे बढ़ा, गम्भीर साहित्य पढ़ने को मिल रहा है। बहुत-सी अच्छी साहित्यिक पत्रिकाएँ बन्द हो गयीं, लेकिन नयी पत्रिकाओं की शुरुआत ने साहित्य को एक नयी दिशा भी दी है। लेखक का बड़ा दुश्मन लेखक ही हो सकता है और कोई नहीं। लेखक दूसरे लेखक को लेकर द्वेष क्यों करता है यह बात मैं आज तक नहीं समझ पाया जबकि लेखन ने दलित चेतना को जाग्रत किया है और कई ऐसे माध्यमों को नयी दिशा दी है जिससे कि उसका स्तर सुधरा है।

आलोचकों के जिस दुष्चक्र में साहित्य फँस गया है उसका सबसे बुरा असर युवापीढ़ी के लेखकों पर हो रहा है, क्योंकि अभी से वह खेमा-बंदी का शिकार हो रहा है। इस दुष्चक्र में फँस जाने के कारण वह अपनी सृजन-क्षमता का उपयोग सही ढंग से नहीं कर पा रहा है।

—विष्णु प्रभाकर

यही हाल रहा तो लुप्त हो जाएगी हिन्दी

लेखकों के साथ यह दिक्कत हो गई है, उनका पाठकवर्ग नहीं है। इसलिए लोगों का ध्यान केन्द्रित कराने का सबसे बढ़िया तरीका यही है और उनके इस अभियान में उनका साथ दे रही हैं पत्र-पत्रिकाएँ। जब संस्थाएँ या पत्र-पत्रिकाएँ किसी का नोटिस नहीं लेती हैं तब वह हताशा में डूब कर एक दूसरे पर आक्रमण करना शुरू कर देते हैं। लेखक आरोपों के दुष्चक्र में फँसते जा रहे हैं। अगर यही हाल रहा तो आनेवाले 50 सालों में हिन्दी का नाम लेनेवाला कोई नहीं रह जायेगा। **—पंकज बिष्ट**

धनञ्जयविरचितं

दशरूपकम्

धनिक कृत अवलोक टीका तथा हिन्दी व्याख्या सहित

सम्पादक

डॉ० रमाशङ्कर त्रिपाठी

प्रारम्भ में अनुसन्धानात्मक भूमिका, अर्थ, विशेष, पूर्व पक्ष, सिद्धान्त तथा संस्कृत टिप्पणी सहित। संस्कृत तथा हिन्दी साहित्य के छात्रों के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण।

मूल्य : 150.00

शेष

(उर्दू अदब की नुमाइंदा पत्रिका)

लोहारपुरा, जोधपुर से प्रकाशित तिमाही पत्रिका 'शेष' का जुलाई-सितम्बर का अंक हमारे सामने है। हिन्दी के माध्यम से उर्दू के उभड़ते रचनाकारों और शायरों की चुनी हुई रचनाओं को प्रस्तुत करने का यह प्रशंसनीय अभिनव प्रयास है। इसकी हर रचना जिन्दगी की सफर को छूती है।

अब गजल का जो नया दौर शुरू हुआ है, उसने गजल को हिंदो-पाक में बौद्धिकता को बल दिया है। इतना ही नहीं, खयाल, चिन्तन, विस्तार, महत्व और भाषाशैली से गजल ने नयी करवट बदली है। हिन्दी-प्रेमियों को उर्दू-साहित्य में हो रहे नये-नये प्रयोगों को इससे जानकारी हासिल होती है। 'शेष' सम्पादक हसन जमाल का यह कदम अच्छी शुरूआत है। पत्रिका का मूल्य बीस रुपया है।

त्रुटि-संशोधन

'भारतीय वाङ्मय' के अप्रैल 2001 के अंक में 'महाभारत के ज्ञातव्य प्रसंग' शीर्षक के अन्तर्गत बताया गया था कि 'अभिमन्यु-पुत्र राजा परीक्षित का जन्म महाभारत-युद्धान्त के एक वर्ष नौ महीने बाद हुआ था।' 'महाभारत कालनिर्णय' ग्रन्थ के यशस्वी विद्वान् श्री मोहन गुप्त ने उस भ्रान्तिमूलक सूचना को संशोधित करते हुए कहा है कि युद्धान्त पौष कृष्ण द्वितीया कलि 1151 पुष्य नक्षत्र में हुआ था तथा राजा परीक्षित का जन्म उसके अगले वर्ष कलि 1152 के चैत्र शुक्ल में हुआ था। इस मान से पौष, माघ, फाल्गुन और चैत्र कृष्ण साढ़े तीन माह के होते हैं, न कि एक वर्ष नौ माह। महाभारत के आश्वमेधिक पर्व के 70वें अध्याय में महर्षि वैशम्पायन ने जनमेजय से कहा था कि तुम्हारे पिता जब तुम एक वर्ष के हुए तब पाण्डव बहुत से रत्न लेकर लौटे। वह धन अश्वमेध-यज्ञ के लिए लाया गया था।

राग जिज्ञासा

मोक्षमूलक सङ्गीत का आध्यात्मिक विवेचन

देवेन्द्रनाथ शुक्ल

विषय क्रम

1. नादब्रह्म, 2. सा विद्या या विमुक्तये, 3. अतीत के सन्दर्भ, 4. ध्रुवपद, पद एवं ख़याल, 5. राग के विविध पक्ष, 6. वर्तमान सङ्गीतशास्त्र और लोकधुन, 7. लय ताल एवं मात्रा, 8. ताल, वाद्य और ध्वनि, 9. घराना, 10. स्वर, रस एवं राग, 11. वर्तमान और राग नियम, 12. अप्रचलित राग, 13. नवनिर्मित राग, 14. राग, समय और मुद्रित सङ्गीत, 15. चित्र चर्चा, 16. साधकों के अनुभव।

राग-रागिनियों के 32 दुर्लभ श्वेत-श्याम तथा रंगीन चित्र।

300.00

पत्रिकाएँ

संचार श्री (शोध-पत्रिका) त्रैमासिक
सम्पादक : डॉ० रमेशचन्द्र त्रिपाठी
के० एस० सक्सेना
सम्पर्क : संचार भवन, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

तुलसी प्रभा (मासिक)
सम्पादक : प्रेमचंद मथान
सम्पर्क : सिंहभूम जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलन
तुलसी भवन, बिष्टुपुर
जमशेदपुर-831001
(वार्षिक 108.00)

अर्थात् (त्रैमासिक)
प्रथम अंक अप्रैल-जून
सम्पादक : मनोज कांत
सम्पर्क : आस्था-कुटी, 42-नियावाँ रोड
फैजाबाद-224001
(वार्षिक 100.00)

केन्द्र भारती
सम्पादक : पी० परमेश्वरन्
सम्पर्क : विवेकानन्द केन्द्र
'प्रयाग', 186-बी०, प्रथम 'सी' रोड
सरदारपुरा
जोधपुर-342003

कोई देश कोई भाषा गन्दे साहित्य से मुक्त नहीं है। बुरा साहित्य तब कहीं अधिक हानि पहुँचाता है जब वह निर्दोष साहित्य के रूप में हमारे सामने आता है। आप कागज पर कलम चलाना शुरू करें, इससे पहले यह ख्याल कर लें कि स्त्री जाति आपकी माता है। विश्वास मानिए, आकाश से जिस तरह इस प्यासी धरती पर सुन्दर शुद्ध जल की वर्षा होती है, उसी तरह आपकी लेखनी से शुद्ध साहित्य की सरिता बहेगी। **—महात्मा गाँधी**

हिन्दी एक अजीब-सी भाषा है। इसमें पढ़ना कोई नहीं चाहता, लिखना हर कोई चाहता है। ढेरों अनियतकालिक पत्रिकाएँ हो गई हैं। किसी न किसी के लिखने के लिए निकल रही हैं। बंगाल और महाराष्ट्र में देखिए, उन्होंने अपना एक पाठकवर्ग बनाया है। हमने भी बनाया था, लेकिन हम उसे बरकरार नहीं रख सके। किन्तु हिन्दी जब भी बात करती है, पूरे देश की तरफ से बात करती है। दूसरी भाषाएँ अपने क्षेत्र तक ही सीमित रहती हैं। कहने को तो कई विचारधाराएँ लेकर पत्रिकाएँ निकल रही हैं, जैसे साहित्य से ही सारी दुनिया बदल डालेंगे। ये लोग आरएसएस की तरह ही साहित्य में अपनी शाखाएँ खोल रहे हैं। लेखक संघ बन गए हैं। जैसे ही कोई नया लिखनेवाला दिखाई देता है, उसे बाँध देते हैं। –रमेशचन्द्र शाह

शीघ्र प्रकाशित

मेहेर बाबा की कृति

सृष्टि और उसका प्रयोजन

अपने आत्मज्ञान तथा अनुभव के आधार पर मेहेर बाबा ने सृष्टि की उत्पत्ति एवं प्रयोजन जैसे गम्भीर प्रसंग को एक सरल विषय के रूप में 'गॉड स्पीक्स' नामक अंग्रेजी भाषा में लिखित अपने ग्रन्थ में प्रस्तुत किया है।

'गॉड स्पीक्स' में सृष्टि के अन्तर्गत आत्मा की चेतना का विकास वस्तुत: अचेतन ब्रह्म का चेतन परमात्मा की ओर यात्रा है। इस यात्रा में ईश्वर जो अनादि व अखण्ड है, अनेक स्वरूपों में प्रकट होता हुआ, स्वयं द्वारा निर्धारित बन्धनों से ऊपर से पार होता है, साथ ही मानव स्वरूप में पुनर्जन्म व अन्तर्मुखी यात्रा के द्वारा अन्तत: आत्म चेतना प्राप्त करता है।

अवतार मेहेर बाबा बीसवीं सदी के एक विश्वविख्यात ईश्वर चेतनपुरुष थे। उनके प्रवचन (डिस्कोर्सेज) तथा गॉड स्पीक्स महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, जिसमें उन्होंने ईश्वर, विश्व तथा अध्यात्म सम्बन्धी तथ्य उजागर किये हैं।

'सृष्टि और उसका प्रयोजन' नामक पुस्तक मेहेर बाबा-कृत गॉड स्पीक्स का सरल हिन्दी में सारांश है।

इसमें सृष्टि की उत्पत्ति, आत्मा व परमात्मा का सम्बन्ध, सृष्टि के माध्यम से आत्मा की चेतना का विकास, पाषाण, धातु, वनस्पति, कृषि, मत्स्य, पक्षी, पशु तथा मानव योनियों में चेतन आत्मा द्वारा संस्कारों का अनुभव, मन व प्राण, पुनर्जन्म प्रतिवर्धने अर्थात् मुक्तिपथ पर चेतन आत्मा की अन्तर्मुखी यात्रा-पूर्णता निर्वाण-निर्विकल्प समाधि-सहज समाधि-तुरिया अवस्था-परमहंस-जीवनमुक्त-सद्गुरु तथा अवतार ऐसे गूढ़ विषयों की व्याख्या प्रस्तुत है। चारो के साथ 'चेतना का विकासक्रम' तथा ईश्वर की दस अवस्थाएँ भी दर्शाई गई हैं।

अन्य गम्भीर विषयों जैसे—माया, द्वैत, संस्कार,, नरक व स्वर्ग, चमत्कार, अध्यात्मपथ की अलौकिक शक्तियाँ, निद्रा, स्वप्न व जागृत अवस्थाएँ, स्वप्न में भविष्य का दर्शन तथा सहज ज्ञान आदि को स्पष्ट करते हुए, उदाहरणस्वरूप कुछ रोचक व सत्य घटनाओं का भी वर्णन किया गया है।

मेहेर बाबा ने उपर्युक्त सभी विषयों को समझाने के पश्चात बतलाया कि सत्य तक पहुँचना व्यक्तिगत है। हर एक को स्वयं अपना उद्धार करना चाहिये, उसे अपने विवेक के प्रकाश में उस पद्धति का अनुसरण करना चाहिये जो उसकी आध्यात्मिक, प्रकृति, भौतिक योग्यता तथा परिस्थितियों के अनुकूल हो।

जीवन की वास्तविकता को ज्ञानपूर्वक समझ कर, विवेक के प्रकाश में अपने साधनपथ का निर्माण करने के इच्छुक पाठकों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी। **—शिवेन्द्र सहाय**

नवप्रकाशित उपन्यास

अंतर्वंशी	*उषा प्रियंवदा*	250
गिरमिटिया गाँधी	*गिरिराज किशोर*	300
क्याप	*मनोहरश्याम जोशी*	150
चतुरंग	*शैलेन्द्र सागर*	395
तत्त्वमसि	*जया जादवानी*	295
दीवारों के बीच : भाग-1	*निदा फ़ाज़ली*	100
दीवारों के बाहर : भाग-2	*निदा फ़ाज़ली*	150
सूतो वा सूतपुत्रो वा	*बच्चन सिंह*	200
रामलुभाया कहता है	*नरेन्द्र कोहली*	350
सुमंगलम से श्रद्धांजलि तक	*सूर्यपाल शुक्ल*	200
दीर्घतमा	*सूर्यकांत बाली*	200
मेरे बेटे की कहानी	*नादिन गोर्डाइमर*	195
कोई अच्छा सा लड़का (अंग्रेज़ी 'ए सूटेबल ब्वाय')	*विक्रम सेठ*	995
आधी रात की संतानें (अंग्रेज़ी, 'मिडनाइट्स चिल्ड्रन्स')	*सलमान रुश्दी*	495
शरम (अंग्रेज़ी, 'शेम')	*सलमान रुश्दी*	250
कुफ्र (अंग्रेजी, 'ब्लासफेमी')	*तहमीना दुर्रानी*	200
फेरा (बांग्ला)	*तसलीमा नसरीन*	55
अशुभ वेला (बांग्ला)	*समरेश मजूमदार*	395
बहादुरशाह का मुकदमा (उर्दू)	*ख्वाज़ा हसन निज़ामी*	150
पाकिस्तान का सच (बांग्ला)	*चाणक्य सेन*	95
अविनश्वर	*आशापूर्णा देवी*	80
रेत की इक्क मुट्ठी	*गुरदयाल सिंह*	85
गुड़िया का घर	*जीलानी बानो*	85
आदिभूमि	*प्रतिभा राय*	85
परछाईं नाच	*प्रियंवद*	120
कथा सतीसर	*चन्द्रकान्ता*	350
शेष कादम्बरी	*अलका सरावगी*	150
तिरोहित	*गीतांजलि श्री*	150
शादी से पेशतर	*शर्मिला बोहरा*	125
एक-सा संगीत	*विक्रम सेठ, अनु. मोजेज माइकल*	295
अमृत संचय	*महाश्वेता देवी, अनु. सुशील गुप्ता*	225
जली थी अग्निशिखा	*महाश्वेता देवी, अनु. रामशंकर द्विवेदी*	125
चार कन्या	*तसलीमा नसरीन, अनु. मुनमुन सरकार*	195
टूटे घोंसले के पंख	*रामकुमार मुखोपाध्याय, अनु. मुनमुन सरकार*	125

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

नवप्रकाशित ग्रन्थ

सेवीवर्गीय प्रबन्ध एवं औद्योगिक सम्बन्ध
(Personnel Management & Industrial Relations)
डा० जगदीशशरण माथुर
रीडर, वाणिज्य विभाग — सजिल्द 250
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय — अजिल्द 150

हिन्दी साहित्य : विविध परिदृश्य 160
डॉ० सदानन्द प्रसाद गुप्त
रीडर, हिन्दी विभाग
गोरखपुर विश्वविद्यालय

संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास
डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी
प्रोफेसर तथा अध्यक्ष — सजिल्द 350
हरिसिंह गौर सागर विश्वविद्यालय — अजिल्द 200

भारतेन्दु के नाट्य शब्द 100
डॉ० पूर्णिमा सत्यदेव
रीडर, हिन्दी विभाग
गोरखपुर विश्वविद्यालय

भौगोलिक चिन्तन : उद्भव एवं विकास
डॉ० श्रीकान्त दीक्षित
रीडर, हिन्दी विभाग — सजिल्द 150
गोरखपुर विश्वविद्यालय — अजिल्द 90

पांचाली (उपन्यास) *डॉ० बच्चन सिंह* 125

राग जिज्ञासा (संगीत) *देवेन्द्रनाथ शुक्ल* 300

सौन्दर्यबोध और हिन्दी नवगीत 250
डॉ० माधवेन्द्रप्रसाद पाण्डेय

दशरूपकम् *डॉ० रमाशङ्कर त्रिपाठी* 150

नियति साहित्यकार की 80
डॉ० सुधाकर उपाध्याय

इतिहास दर्शन 150
डॉ० झारखण्डे चौबे
अध्यक्ष, इतिहास विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

महान् शिक्षाशास्त्रियों के सिद्धान्त 80
आर० आर० रस्क

संसार के महान् शिक्षाशास्त्री 60
डॉ० इन्द्रा ग्रोवर

बबूल (उपन्यास) *विवेकी राय* 40

लोकऋण (उपन्यास) *विवेकी राय* 80

कहानियाँ *सं० डॉ० शुकदेव सिंह* 30

प्रतिनिधि कहानियाँ *सं० डॉ० बच्चन सिंह* 45

मेहेरबाबा की कृति
सब कुछ और कुछ नहीं
50.00

पुस्तक समीक्षा

लेखक द्वारा लेखक की रचना पर प्रतिक्रिया

पांचाली

नाथवती अनाथवत

डॉ० बच्चन सिंह ने नारी की शाश्वत व्यथा को 'पांचाली' के माध्यम से बड़ी कुशलतापूर्वक उकेरा है। महाभारत महाकाव्य है। उसकी सीमाओं को सुरक्षित रखते हुए, लेखक ने यथाशक्ति अपनी बात कही है। कहीं-कहीं दैवी घटनाओं को मानवीय रूप भी दिया है। जैसे द्रौपदी चीरहरण की घटना। लेकिन वे असाधारण घटनाओं से पूरी तरह मुक्ति नहीं पा सके हैं। प्रयत्न बराबर करते रहे। लेकिन, चूँकि 'पांचाली' का मुख्य विषय नारी की व्यथा का अंकन ही है, इसलिए दूसरी घटनाएँ गौण हो जाती हैं और समाज में नारी की अनादिकाल से जो स्थिति रही है, उसका वास्तविक स्वरूप हमारे अन्तर को कुरेदता रहता है। पांचाली का अन्तर्द्वन्द बहुत सशक्त है।

सारी कथाओं को भूलकर, यदि हम पांचाली पर अपनी दृष्टि केन्द्रित रखें तो हमें इस रचना की वास्तविक शक्ति का पता लगता है। मुझे ऐसा लगता रहा, यदि लेखक सभी दैवीय और अलौकिक धारणाओं से मुक्ति पाकर पांचाली की व्यथा को उकेरते तो और भी अच्छा होता, उसे यज्ञ की अग्नि से पैदा हुआ बताने की कोई आवश्यकता नहीं थी। फिर भी जैसा मैंने कहा, पूरी रचना पढ़ जाने के बाद मेरे सामने और कुछ नहीं था, केवल 'पांचाली' थी, शाश्वत नारी थी, अपनी शाश्वत व्यथा के साथ, यही इसकी सबसे बड़ी सफलता है। नारी की यह व्यथा आज भी, लगभग उसी रूप में, समाज को उद्वेलित कर रही है। गर्भ में कन्या का पता लगा लेना, भ्रूण हत्या, दहेज के कारण नारी को जला देना, न जाने कैसे-कैसे अन्याय आज भी उसी तरह हो रहे हैं। यह द्रौपदी के चीरहरण की घटना का ही तो बदला हुआ रूप है।

इस दृष्टि से भी मैं इस रचना का स्वागत करता हूँ। युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन आदि चरित्रों का निरूपण भी यथार्थ की भूमि पर हुआ है। भाषा विषय के अनुरूप है। लेखक ने गहरे पैठ कर चरित्रों को उकेरा है। और भी बहुत कुछ है इस उपन्यास में जो सोचने को विवश करता है, और नयी प्रेरणा देता है। मैं तो मात्र एक पाठक की दृष्टि से अपनी प्रतिक्रिया बता रहा हूँ। कुल मिलाकर मुझे यह कृति बहुत सम्भावनाओं से भरपूर लगी है। 'नाथवती-अनाथवत' बड़ा सार्थक शीर्षक है और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है, पर थोड़े लिखे को बहुत समझिए। लेखक को बहुत-बहुत बधाई।

—विष्णु प्रभाकर

मैत्रेयी

प्रभुदयाल मिश्र

उपन्यास में उपनिषद्

हिन्दी में औपनिषदिक उपन्यास की कोई परम्परा नहीं है। कुछ छिटपुट प्रयास ही हुए हैं, उन्हीं में से एक है प्रभुदयाल मिश्र का उपन्यास 'मैत्रेयी' जिसकी कथा के सूत्र बृहदारण्यक, छांदोग्य, मुण्डक, ईशावास्य, कठ आदि उपनिषदों से लिये गए हैं, किन्तु चरित्र चित्रण और शिल्पविधान की दृष्टि से यह मनोवैज्ञानिक उपन्यास है।

मैत्रेयी गर्गगोत्रीय ऋषि वचक्नु की प्रत्री है। वह विदुषी, सुवक्ता, दबंग और स्वतंत्र प्रकृति की है। उसका पूरा समय चिन्तन, मनन और शास्त्रार्थ में व्यतीत होता है। वह पुरुषप्रधान समाज में स्त्री को गौण स्थान दिये जाने से क्षुब्ध रहती है और शास्त्रार्थ सभाओं में जाकर अपने समान अधिकार को प्रतिष्ठित करती है। वह राजा जनक के द्वारा आयोजित ज्ञान-सभा में भी सम्मिलित होती है और पहली बार एक पुरुष के प्रति आकृष्ट होती है। वह पुरुष है याज्ञवल्क्य। वह अपने प्रश्नों से याज्ञवल्क्य के ज्ञान और वाक्पटुता की परीक्षा करती है। यह जानते हुए भी कि ऋषि विवाहित हैं, वह उनके साथ विवाह कर लेती है और उनके आश्रम में जाकर कात्यायनी को बड़ी बहन मान कर रहती है।

उपन्यास का विचार-पक्ष अत्यंत समृद्ध है। अनेक ऋषियों का तत्व-चिन्तन, शास्त्रार्थ या ज्ञान-सभाओं में अभिव्यक्त होता है। उपन्यास आदि से अंत तक औपनिषदिक चिन्तन का दस्तावेज है। आचार्य, ऋषि, गुरु और शिष्य तो ज्ञान-चर्चा में संलग्न रहते ही हैं, जनक और अजातशत्रु जैसे राजा भी तत्त्वज्ञान की बारीकियों का विवेचन करते दिखाए गए हैं। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि लेखक ने बड़ी कुशलता से नारी-जीवन की समकालीन और सर्वकालीन समस्या से संबंधित विचार कथा-सूत्र में पिरो दिए हैं।

इस उपन्यास की भाषिक संरचना उपनिषद-काल के वातावरण को उत्पन्न करने में समर्थ है। भाषा में प्रांजलता के साथ नए शब्द-प्रयोग और पशुओं की बोली के लोक प्रचलित अर्थ देकर उसे जीवंत बना दिया है—'पद यात्रा' के स्थान पर 'पग यात्रा' (पृ० 12) 'तत्काल' के स्थान पर 'तत्समय' का प्रयोग और जंगली सियारों की 'हुआ-हुआ' ध्वनि (पृ० 49) आदि। जिस तरह के उपन्यास की प्रतीक्षा प्रबुद्ध पाठक करता है, यह उपन्यास उसी तरह का है।

परशुराम विरही

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज के ग्रन्थ

मनीषी की लोकयात्रा (म.म.पं. गोपीनाथ कविराज का जीवन-दर्शन)		300
तांत्रिक वाङ्मय में शाक्त दृष्टि		100
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1-2)		80
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 3)		50
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और योग-तन्त्र-साधना	*रमेशचन्द्र अवस्थी*	50
परातंत्र साधना पथ (गोपीनाथ कविराज)		40
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्वकथा		250
श्री श्री सिद्धिमाता प्रसंग (कायाभेदी ब्रह्मवाणी तथा विवरण सहित)		20
भारतीय धर्म साधना	*म.म.पं. गोपीनाथ कविराज*	80
तन्त्र और आगम शास्त्रों का दिग्दर्शन		15
ज्ञानगंज	*म.म.पं. गोपीनाथ कविराज*	60
कविराज प्रतिभा	*म.म.पं. गोपीनाथ कविराज*	64
दीक्षा	*म.म.पं. गोपीनाथ कविराज*	60
श्री साधना	*म.म.पं. गोपीनाथ कविराज*	50
स्वसंवेदन		50
प्रज्ञान तथा क्रमपथ	*म.म.पं. गोपीनाथ कविराज*	80
तांत्रिक साधना और सिद्धान्त		120
श्रीकृष्ण प्रसंग	*म.म.पं. गोपीनाथ कविराज*	250
काशी की सारस्वत साधना		35
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी		100
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग-1)		200
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग-2)		120
सनातन-साधना की गुप्तधारा		100
अखण्ड महायोग	*म.म.पं. गोपीनाथ कविराज*	50
क्रम साधना	*म.म.पं. गोपीनाथ कविराज*	60
भारतीय साधना की धारा		30
परमार्थ प्रसंग (प्रथम खण्ड)		150
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान		20

पं० गोपीनाथ कविराज समकालीन संत-महात्मा

सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन	*नंदलाल गुप्त*	160
English Edition		*In Press*
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्व कथा	*म.म.पं. गोपीनाथ कविराज*	250
पुराणपुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी	*सत्यचरण लाहिड़ी*	120
नीम करौरी के बाबा	*डॉ. बदरीनाथ कपूर*	12
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान	*सद्गुरुप्रसाद श्रीवास्तव*	150
सोमबारी महाराज (उत्तराखण्ड की अनन्य विभूति)	*हरिश्चन्द्र मिश्र*	50
Purana Purusha Yogiraj Sri Shhyama Charan Lahiree	*Dr. Ashok Kr. Chatterjee*	400

आगामी प्रकाशन

रसाभिव्यक्ति *डॉ० दशरथ द्विवेदी*
हिन्दी संतकाव्य : समाजशास्त्रीय अध्ययन *डॉ० वासुदेव सिंह*
रसाभिव्यक्ति *डॉ० दशरथ द्विवेदी*
The Educational Philosophy of W.H. Kilpatrick *Dr. Pratibha Khanna*
समाजदर्शन की भूमिका *डॉ० जगदीश सहाय*
बोलने की कला *डॉ० भानुशङ्कर मेहता*
प्रसाद की चतुर्दश पदियाँ *डॉ० किशोरीलाल गुप्त*
फणीश्वरनाथ रेणु और उनका कथासाहित्य *डॉ० रागिनी वर्मा*
महाभारत कालनिर्णय *डॉ० मोहन गुप्त*
पत्र मणिपुत्तुल के नाम *कुबेरनाथ राय*
अंतरंग संस्मरणों में 'प्रसाद' *पुरुषोत्तमदास मोदी*
चरित्रहीन (उपन्यास) *आबिद सुरती*
ननकी (उपन्यास) *बच्चन सिंह*
प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक *डॉ० विमलमोहिनी श्रीवास्तव*
देवभूमि उत्तराखण्ड *डॉ० गिरिराजशाह व डॉ० सरिता शाह*
काशी का इतिहास *डॉ० मोतीचन्द्र*
पूर्वांचल के संत महात्मा *परागकुमार मोदी*
भोजपुरी लोकसाहित्य *डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय*
वेद की कविता *प्रभुदयाल मिश्र*
The Rise and Growth of Hindi Journalism *Dr. Dhirendra Nath Singh*
विनयपत्रिका का काव्यशास्त्रीय अध्ययन *डॉ० रामअवतार पाण्डेय*
मध्ययुगीन काव्य प्रतिभाएँ *डॉ० रामकली सर्राफ*
हिन्दी का गद्य साहित्य
(पूर्णतया संशोधित तथा परिवर्धित चतुर्थ संस्करण) *डॉ० रामचन्द्र तिवारी*
जपसूत्रम् (प्रथम खण्ड) *स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती*
व्यावहारिक पत्रकारिता *बच्चन सिंह*
सृष्टि और उसका प्रयोजन *मेहेर बाबा*
Indians Artificial Satellites *Dr. S.N. Ghosh*

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

सौन्दर्यबोध और हिन्दी नवगीत

डॉ० माधवेन्द्रप्रसाद पाण्डेय
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग

नवगीत का सौन्दर्यबोध मूलत: भारतीय परिवेश का सौन्दर्यबोध है। इसमें आधुनिक जीवन की विषम परिस्थितियों का यथार्थपरक चित्रण हुआ है जो इसे विशिष्टता प्रदान करता है।

आधुनिक हिन्दी काव्य के विकास का परिदृश्य करती महत्त्वपूर्ण कृति। **250.00**

साहित्य शास्त्र

आधुनिक हिन्दी आलोचना : संदर्भ एवं दृष्टि (पारिभाषिक शब्दावली का साक्ष्य) *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 80
काव्यशास्त्र *डॉ० भगीरथ मिश्र* 150
नया काव्यशास्त्र *डॉ० भगीरथ मिश्र* 80
पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास, सिद्धान्त और वाद *डॉ० भगीरथ मिश्र* 70
काव्यरस : चिन्तन और आस्वाद *डॉ० भगीरथ मिश्र* 50
आलोचक का दायित्व *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 40
भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र *डॉ० अर्चना श्रीवास्तव* 50

साहित्य समीक्षा

भारतेन्दु के नाट्य शब्द *डॉ० पूर्णिमा सत्यदेव* 100
सृजन यज्ञ जारी है (डॉ० विवेकी राय) *डॉ० अनिलकुमार 'आंजनेय'* 100
हिन्दी व्यंग्य साहित्य और हरिशंकर परसाई *डॉ० मदालसा व्यास* 200
आधुनिक हिन्दी कविता का वैचारिक पक्ष *डॉ० रतनकुमार पाण्डेय* 400
टूटते हुए गाँव का दस्तावेज (लोकऋण बनगंगी मुक्त है) *सं० डॉ० सर्वजीत राय* 40
समकालीन कविता की प्रवृत्तियाँ *डॉ० रामकली सराफ* 200
सन्त रैदास *श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला* 60
हिन्दी का गद्य-साहित्य *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 250
हिन्दी साहित्य : विविध परिदृश्य *डॉ० सदानन्द गुप्त* 160
हिन्दी साहित्य का नवीन इतिहास *डॉ० लाल साहब सिंह* 50
कविवर बिहारी *जगन्नाथदास 'रत्नाकर'* 40
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और उनका काव्य संसार *मंजु त्रिपाठी* 100
प्रगतिशील आलोचना की परम्परा और डॉ० रामविलास शर्मा *डॉ० राजीव सिंह* 140
प्रगतिशील काव्यधारा और त्रिलोचन *डॉ० हरिनिवास पाण्डेय* 150
वाक्सिद्धि *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 160
निबन्धकार पं० विद्यानिवास मिश्र *श्रुति मुखर्जी* 50
रघुवीर सहाय की काव्यानुभूति और काव्यभाषा *डॉ० अनन्तकीर्ति तिवारी* 80
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 70
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचना कोश *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 50

तुलसी साहित्य मीमांसा

कथा राम कै गूढ़ *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 125
मानस सूक्ति सुधा *डॉ० भगवानदेव पाण्डेय* 80
मानस मीमांसा *डॉ० युगेश्वर* 150
मानस विमर्श (दो भाग) *भगीरथ दीक्षित* 300

कबीर साहित्य

कबीर वाङ्मय (पाठभेद, टीका, डॉ० जयदेव सिंह तथा समीक्षा सहित) *डॉ० वासुदेव सिंह*
प्रथम खण्ड : रमैनी 70
द्वितीय खण्ड : सबद 250
तृतीय खण्ड : साखी 125
कबीर काव्य कोश *डॉ० वासुदेव सिंह* 150
कबीर वाणी पीयूष *डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह* 45
हिन्दी संत काव्य : समाजशास्त्रीय अध्ययन *डॉ० वासुदेव सिंह* 250
संत कबीर और भगताही पंथ *डॉ० शुकदेव सिंह* 130
कबीर बीजक का भाषाशास्त्रीय अध्ययन *डॉ० शुकदेव सिंह* 40
कबीर की भाषा *डॉ० माताबदल जायसवाल* 50
संतो राह दुओ हम दीठा (कबीर) *सं० डॉ० भगवानदेव पाण्डेय* 150
कबीर और भारतीय संत साहित्य *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 100

ललित निबन्ध

नियति साहित्यकार की *सुधाकर उपाध्याय* 80
वाणी का क्षीरसागर *कुबेरनाथ राय* 120
जगत तपोवन सो किया *डॉ० विवेकी राय* 100
किरात नदी में चन्द्र-मधु *कुबेरनाथ राय* 40
कहीं दूर जब दिन ढले *डॉ० गुणवन्त शाह* 40
भोर का आवाहन *डॉ० विद्यानिवास मिश्र* 20

संस्कृत, व्याकरण, भाषा तथा साहित्य

प्रारम्भिक रचनानुवाद कौमुदी *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 12
रचनानुवाद कौमुदी *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 45
प्रौढ़ रचनानुवाद कौमुदी *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 80
संस्कृत-निबन्ध-शतकम् *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 80
संस्कृत-व्याकरण एवं लघुसिद्धान्त कौमुदी (सम्पूर्ण) सजिल्द 200, अजिल्द 140 *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी*
भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र सजिल्द 200, अजिल्द 100 *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी*
अर्थविज्ञान एवं व्याकरण दर्शन *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* 400
वैदिक साहित्य एवं संस्कृति सजिल्द 250, अजिल्द 125 *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी*
लघुसिद्धान्तकौमुदी *डॉ० रामअवध पाण्डेय व डॉ० रविनाथ मिश्र* 40
बालसिद्धान्तकौमुदी *ज्योतिस्वरूप मिश्र* 50
सिद्धान्त-कौमुदी (कारक प्रकरणम्) *ज्योतिस्वरूप मिश्र, उर्मिला मोदी* 20
चन्द्रालोक-सुधा एवं छन्दोमञ्जरी-सुधा *विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी* 20
अभिनव का रस-विवेचन *नगीनदास पारेख तथा डॉ० प्रेमस्वरूप गुप्त* 100
वक्रोक्तिजीवितम् *डॉ० दशरथ द्विवेदी* 80

ध्वन्यालोक (दीपशिखा टीका सहित)
डॉ० चन्द्रिकाप्रसाद शुक्ल 50
मृच्छकटिक : शास्त्रीय, सामाजिक एवं राजनीतिक अध्ययन *डॉ० शालग्राम द्विवेदी* 100
संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास सजिल्द 350
डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी अजिल्द 200
संस्कृत साहित्य की कहानी *उर्मिला मोदी* 50
भारतीय दर्शन का सुगम परिचय
डॉ० शिवशंकर गुप्त 80
संस्कृत का भाषाशास्त्रीय अध्ययन
डॉ० भोलाशंकर व्यास 100
शिवराम त्रिपाठी कृत लक्ष्मीनिवास कोश (उणादि कोश) *डॉ० रामअवध पाण्डेय* 40
वेद व विज्ञान *स्वामी प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती* 180
वेदचयनम् *विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी* 50
ऋग्वेदभाष्यभूमिका *डॉ० हरिदत्त शास्त्री* 25
पालि-प्राकृत-अपभ्रंश-संग्रह
डॉ० रामअवध पाण्डेय तथा डॉ० रविनाथ मिश्र 70
भुशुण्डि रामायण (3 खण्ड) *डॉ० भगवतीप्रसाद सिंह तथा पं० रामाधार शुक्ल* 475
शांकरवेदान्ते तत्व-मीमांसा *डॉ० के०पी० सिन्हा* 40
शृङ्गारमञ्जरी सट्टकम् (श्रीमद्विश्वेश्वर)
सं० बाबूलाल शुक्ल 20
मुद्राराक्षसम् *सं० डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 100
मेघदूतम् (कालिदास) *डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 50
दशरूपकम् *डॉ० रमाशंकर त्रिपाठी* 150
अभिज्ञानशाकुन्तलम् *सं० डॉ० शिवशंकर गुप्त* 80

प्रसाद साहित्य

ध्रुवस्वामिनी (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 9
ध्रुवस्वामिनी (मूल नाटक तथा समीक्षा)
डॉ० जगदीशप्रसाद श्रीवास्तव 20
प्रसाद तथा 'आँसू' (मूल, टीका तथा समीक्षा)
डॉ० विनयमोहन शर्मा 20
कामायनी (काव्य) *जयशंकरप्रसाद* 20
चन्द्रगुप्त (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 25
स्कन्दगुप्त (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 20
अजातशत्रु (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 16

प्रेमचंद साहित्य

कर्मभूमि *प्रेमचंद* 40
निर्मला *प्रेमचंद* 25
संक्षिप्त गबन *प्रेमचंद* 30
गबन (सम्पूर्ण) *प्रेमचंद* 40
गोदान *प्रेमचंद* 75

उपन्यास

सागरी पताका *राधामोहन उपाध्याय* 250
मैत्रेयी (औपनिषदिक उपन्यास) *प्रभुदयाल मिश्र* 120
बहुत देर कर दी *अलीम मसरूर* 60
मंगला *अनन्तगोपाल शेवड़े* 30
चौदह फेरे *शिवानी* 100

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

कबीर और भारतीय संत साहित्य

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

एक सौ रुपये

उनका होना आज हमारे लिए बेहद जरूरी है। प्रस्तुत कृति समकालीन भारतीय संतों और चिन्तन-धाराओं के मध्य कबीर को समझने का प्रयत्न है।

पुस्तक-प्रकाशन

पुस्तक व्यवसाय की एक और बड़ी विडम्बना है। सरकार इसे उद्योग नहीं मानती इसलिए उद्योगों को जो सुविधायें मिलती हैं, वे प्रकाशकों को नहीं मिलतीं। हर उद्योग में कच्चेमाल की अपेक्षा बना हुआ माल अधिक मूल्यवान होता है। पुस्तक उद्योग में कच्चा माल (कागज) बहुत मूल्यवान है। उसका स्टाक देखकर कोई भी बैंक कर्ज देने को तैयार हो जाएगा, किन्तु जब वह पुस्तक के रूप में ढल जाता है तो पुस्तक के बिकने पर वह कितनी मूल्यवान क्यों न दिखाई दे, न बिकने पर वह एक रुपये किलो बिकनेवाली रद्दी से अधिक नहीं होता। अच्छे-बड़े प्रकाशक भी जब अपने पास वर्षों से अनबिकी पुस्तकों या उनके छपे फर्मों को बेचते हैं तो इससे अधिक उन्हें कुछ नहीं मिलता। छपी हुई पुस्तकों के स्टाक पर कोई बैंक कर्ज नहीं देता।

—डॉ० महीप सिंह

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 2 **सितम्बर 2001** **अंक : 9**

प्रधान सम्पादक
पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक
परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क
रु० 30.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन
वाराणसी
के लिए
अनुरागकुमार मोदी
द्वारा प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०
वाराणसी
द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत **रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2001**

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)
विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149
चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN
Premier Publisher & Bookseller
(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)
Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149
Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

✆ : (0542) 353741, 353082 ● Fax : (0542) 353082 ● E-mail : vvp@vsnl.com ● vvp@ndb.vsnl.net.in